भारतीय राजनीति के समक्ष साम्प्रदायिकता की चुनौती

शोधकर्ता

संजू चौधरी

राजनीति विज्ञान विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय,

जयपुर (राज.)

सारांश

भारत धर्मनिरपेक्ष देश है यहॉ पर सभी धर्मो को समान आदर व सम्मान है। देश में अनेक धर्मो के लोग निवास करते है सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की है। साम्प्रदायिकता हिंसक होती है, अंधविश्वास व कट्टरता पर आधारित होती है। भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या उत्पन्न होने के अनेक कारण है जिनमें वोट की राजनीति, आर्थिक स्वार्थ, अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक अंधविश्वास, पुलिस प्रशासन की लापरवाही, आपसी अविश्वास इत्यादि। साम्प्रदायिकता समाज व राष्ट्र के लिए बहुत घातक है समाज में अशांति व हिंसा फैलती है। देश की एकता, अखण्डता व सुरक्षा को खतरा पैदा हो जाता है देश की लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था व अर्थव्यवस्था कमजोर होती है साम्प्रदायिकता भारतीय समाज व राजनीति के लिए विनाशकारी है जिसको जड़ से समाप्त करना अतिआवश्यक है। साम्प्रदायिकता को समाप्त करने के लिए राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, प्रशासनिक, शैक्षिक आर्थिक आदि स्तरों पर आपसी विश्वास व ईमानदारी से कार्य करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द : भारतीय राजनीति, साम्प्रदायिकता, समाज, लोकतांत्रिक, मानवीय मूल्य, सद्भावना, आपसी विश्वास, धर्मनिरपेक्षता।

प्रस्तावना

भारत दुनिया का एक विशाल लोकतांत्रिक राष्ट्र है। जिसमें विभिन्न धर्मो के लोग निवास करते है। जिसमें विविध प्रकार की भाषा बोली जाती है। यहॉ की सभ्यता और संस्कृति बहुत प्राचीन है। भारत प्राचीन काल में शिक्षा का केन्द्र रहा है जिसका प्रभाव

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दुनिया के देशों पर पडा। भारत का सांस्कृतिक महत्व रहा है। लेकिन आज भारतीय राजनीति के समक्ष अनेक चुनौतियॉ पैदा हो गयी है। जिनमें साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार आदि। आज साम्प्रदायिकता के कारण भारतीय राजनीति प्रभावित हो रही है जिससें देश की एकता, अखण्डता, सभ्यता, संस्कृति, आर्थिक विकास, शांति को खतरा पैदा हो गया है। साम्प्रदायिकता के कारण समुदायों में आपसी अविश्वास, भय, वैमनस्यता बढ़ रही है। किसी भी समाज व राष्ट्र के चहुमुखी विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वहाँ के सभी समुदाय आपसी प्रेम, भाईचारे, मित्रतापूर्वक रहे। उनमें आपसी विश्वास हो, सहयोग की भावना हो तभी समाज व देश विकास के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। धर्म का सम्बन्ध मनुष्य की भावनाओं, आध्यात्मिकता, भक्ति विश्वास व श्रद्धा से है। धर्म मनुष्य के आध्यात्मिक व आत्मिक जीवन को तो प्रभावित करता ही है साथ ही उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक जीवन को भी प्रभावित करता है। भारतीय संविधान में भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया है सभी भारतीय नागरिकों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान की है।

अध्ययन का उद्देश्य

साम्प्रदायिकता क्या है इसका क्या अर्थ है इसका कैसे उदय व विकास हुआ। भारतीय राजनीति व समाज में यह कैसे पैदा हुई। साम्प्रदायिकता की समस्या पैदा होने के कौन–कौन से कारण है जिनसे यह बनी हुई है इसकी व्याख्या करना। साम्प्रदायिकता के क्या दुष्परिणाम है कैसे साम्प्रदायिकता से देश की एकता, अखण्डता व लोकतांत्रिक शासन प्रणाली कमजोर होती है इसकी समीक्षा करना। साम्प्रदायिकता को समाप्त करने के लिए कौन कौन से प्रयास करने की आवश्यकता है। साम्प्रदायिकता की समस्या के समाधान के लिए सुझाव आदि बातों को बताने का प्रयास किया गया है।

साम्प्रदायिकता का अर्थ /अभिप्राय

साम्प्रदायिकता एक विचारधारा जो धार्मिकता से सम्बन्धित है। समाज में अनेक धर्मो के लोग निवास करते है सभी धर्मो की अपनी–अपनी मान्यता, आस्था, विश्वास व परम्पराएँ होती है जिनको लोग मानते है एवं अपने जीवन में पालन करते है। लेकिन समाज के कुछ लोग अपने हितों की पूर्ति के लिए धर्म की आड़ में साम्प्रदायिकता को

बढ़ावा देते है वे समाज में ऐसा वातावरण तैयार कर देते है जिससे एक–दूसरे के धर्म के लोगों में एक दूसरे से श्रेष्ठता साबित करने की होड़ मच जाती है। लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़का कर समाज में भाईचारे व बंधुत्व की भावना को समाप्त करने की कोशिश करते है। धर्म के साथ जोड़कर ही साम्प्रदायिकता की विचारधारा पल्लवित होती है। साम्प्रदायिकता फैलाने वाले लोगों का धर्म व मानवीय मूल्यों से कोई वास्ता नहीं होता न ही समाज की भलाई व उसके कल्याण से उनका मतलब तो सिर्फ अपने स्वार्थो की पूर्ति करना होता है। साम्प्रदायिक व्यक्ति धार्मिक नहीं होता है उसका धर्म की रक्षा एवं समाज की रक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। साम्प्रदायिकता हिंसक होती है दूसरे धर्मो के प्रति नफरत फैलाती है। दुष्प्रचार करती है। अंधविश्वास व कट्टरता पर आधारित होती है। समूह विशेष के हितों पर बल दिया जाता है। जिसमें दूसरे के हितों पर कुठाराघात किया जाता है। संकीर्ण मानसिकता से कार्य किया जाता है। अपने हितों को राष्ट्रीय हितों से अधिक प्राथमिकता दी जाती है। अपने को राष्ट्रीय विचारधारा से अलग करने की कोशिश की जाती है। धार्मिक समुदायों के बीच विरोध और झगड़े पैदा करती है। समुदाय विशेष की एकता पर जोर देकर कट्टरता पैदा करती है।

साम्प्रदायिकता का इतिहास एवं विकास

1857 ई0 में अंग्रेज (ब्रिटिश) शासन के खिलाफ देश को स्वतन्त्र कराने के लिए प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष हुआ। जिसमें हिन्दू व मुसलमानों ने राष्ट्रीय एकता का परिचय देते हुए अंग्रेज शासन को उखाड़ फैकने के लिए संघर्ष किया। अंग्रेज इस बात को भली–भॉति जानते थे कि हिन्दू व मुसलमान एक हो गये तो भारत में शासन करना बहुत कठिन होगा। इसलिए उन्होंने दोनों समुदायों के बीच साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर फूट डालों और राज करो की नीति अपनायी। जिसके द्वारा अंग्रेजों ने हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ाया। मुसलमानों को खुश करने के लिए 1905 ई0 में साम्प्रदायिक आधार पर तत्कालीन गवर्नर जरनल लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर दिया जिसका उद्देश्य हिन्दू व मुसलमानों को आपस में लड़ाना था। 1906 ई0 में ढाका में नबाव सलीमुल्ला के नेतृत्व में 'मुस्लिम लीग' की स्थापना की जिसका लक्ष्य था भारतीय मुसलमानों में ब्रिटिश शासन के प्रति भक्ति पैदा करना व मुसलमानों के हितों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

की रक्षा करना। उनकी मॉगों को ब्रिटिश शासन के समक्ष रखना। 1909 ई0 में तत्कालीन भारत सचिव मार्ले एवं वायसराय लार्ड मिण्टो ने भारत शासन अधिनियम 1909 लागू किया जिसे मार्ले मिण्टो सुधार के नाम से जाना जाता है। साम्प्रदायिक आधार पर चुनाव प्रणाली की शुरूआत की जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एकता को कमजोर कर मुस्लिम व हिन्दूओं के बीच साम्प्रदायिक तनाव व वैमनस्य पैदा करना था। इसमें मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र एवं मताधिकार की व्यवस्था की गई थी। जिसका दुष्परिणाम निकला मुसलमानों व हिन्दूओं के बीच साम्प्रदायिक वैमनस्य, तनाव, अविश्वास पैदा होना। देश में अशांति व हिंसा उत्पन्न होना वाद में जिसका दुष्परिणाम 1947 में भारत का विभाजन होना व पाकिस्तान का बनना। 1916 ई0 कांग्रेस लीग के बीच एक समझौता हुआ जिसे लखनऊ समझौता कहा जाता है। इसमें कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की मॉग स्वीकार कर ली। भारत शासन अधिनियम 1919 जिसे माण्टेग्यू चैम्स फोर्ड सुधार योजना के नाम से भी जाना जाता है इसके द्वारा साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति का विस्तार करते हुए मुसलमानों के अलावा ईसाई, सिख, आंग्ल इण्डियन को भी साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व दिया गया। भारत शासन अधिनियम 1935 द्वारा अंग्रेजों ने साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व प्रणाली का विस्तार किया जो देश के लिए नुकसान दायक थी। लेकिन अंग्रेजों ने अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए इसका विस्तार किया। अन्ततः 1947 में भारत का साम्प्रदायिकता के आधार पर विभाजन हुआ। एक मुस्लिम देश के रूप में पाकिस्तान का निर्माण हुआ। भारतीय संविधान में भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया है। स्वतन्त्रता के बाद भारत में साम्प्रदायिक घटनाएँ हुई है। 1984 में सिक्ख विरोधी दंगे, 1986 में कश्मीर में दंगे, 1989 के भागलपुर दंगे, 1989 के वाराणसी दंगे, 1992 के मुम्बई दंगे, 2002 के गुजरात दंगे, 2006 के अलीगढ़ दंगे, 2012 असम दंगे, 2013 मुजफ्फरनगर दंगे आदि साम्प्रदायिक हिंसक घटनाएँ हुई है जिसमें अनेक लोगों की जान गई, अनेक घायल हुए व बेघर हुए लोगों में तनाव व वैमनस्य बढ़ा व सम्पति का नुकसान हुआ।

साम्प्रदायिकता के कारण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत में साम्प्रदायिकता का कोई एक कारण नहीं है। इसके कई कारण है। वोट की राजनीति ने भी साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया है। वोट की राजनीति के कारण अल्पसंख्यक समुदाय के प्रति तुष्टिकरण की नीति अपनायी जाती है। कुछ व्यक्ति साम्प्रदायिकता के सहारे अपने राजनीतिक हितों को साधने की कोशिश करते है। धर्म के नाम पर समाज में साम्प्रदायिकता फैलाकर अपने राजनीतिक लाभ प्राप्त करने की कोशिश करते है जिससे की वे अपना जीवन शान व ऐशों आराम से जी सके। ऐसे साम्प्रदायिक व्यक्तियों को समाज के कल्याण से कोई वास्ता नहीं होता है उनके लिए धर्म एक लाभ हासिल करने का साधन मात्र है।

समाज के कुछ व्यक्ति अपने आर्थिक स्वार्थो की पूर्ति के लिए भी समाज में साम्प्रदायिकता फैलाते है। कुछ व्यक्तियों की नजर अल्पसंख्यकों की जमीन, उद्योग धन्धों, जायदाद, मकानों पर होती है वे समाज में साम्प्रदायिक हिंसा फैलाकर अल्पसंख्यकों में डर व भय पैदाकर उन्हें वहॉ से पलायन के लिए मजबूर कर देते है वाद में उनकी सम्पत्ति पर अवैध कब्जा कर लेते है। व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण भी बड़े–बड़े शहरों में समाज के कुछ लोग अपने व्यापारिक हितों की पूर्ति के लिए समाज में साम्प्रदायिकता फैला कर अपने आर्थिक हितों की पूर्ति करते है। जिससे साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिलता है। समाज में जब गरीबी व बेरोजगारी फैलती है तब ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति मानसिक रूप से परेशान हो जाता है ऐसे लोगों को समाज के कुछ असामाजिक तत्व उनको गुमराह करते है कि तुम्हारे जैसे समुदाय विशेष के लोगों के साथ भेदभाव होने के कारण आज तुम्हारे जैसे लोग गरीब व बेरोजगार हो। इसलिए तुम्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना चाहिए। ऐसे लोग, असामाजिक तत्वों के बहकाबे में आकर साम्प्रदायिक हिंसा को बढाते है जिसके कारण साम्प्रदायिकता का जहर समाज में फैलता है। जब किसी समुदाय के लोगों का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक शैक्षणिक आदि शोषण किया जाता है तो उनमें आक्रोश पैदा होता है जिससे साम्प्रदायिकता की समस्या पैदा होती है। ऐसी परिस्थितियों से व्यक्तियों के मन में एक दूसरे के प्रति वैमनस्य, अविश्वास, घृणा की भावना उत्पन्न होती है जिसके परिणाम धीरे–धीरे साम्प्रदायिक हिंसा के रूप में समाज के सामने आता है।

ऐतिहासिक घटनाएँ भी भारत में साम्प्रदायिकता को बढाने में जिम्मेदार है भारत में अंग्रेजों ने अपने हितों की पूर्ति के लिए हिन्दू व मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक वैमनस्य पैदा किया उन्होंने अपनी फूट डालों राज करो की नीति से हिन्दू व मुसलमानों के बीच अविश्वास, अलगाव, व शत्रुता पैदा की। साम्प्रदायिकता का एक कारण अशिक्षा भी है अशिक्षित लोग जल्दी से अफवाहो पर विश्वास कर लेते है। असामाजिक तत्वों के बहकावे में आ जाते है जिससे साम्प्रदायिक तनाव बढ़ता है। कभी कभी समाचर पत्रों, टेलीविजन चैनलों में साम्प्रदायिक घटनाओं को बढा चढाकर बताया जाता है बार–बार उनको प्रदर्शित करते हैं जिससे लोगों में आक्रोश पैदा होता है। जिससे साम्प्रदायिक तनाव बढ़ता है। पुलिस व प्रशासन द्वारा समय रहते उचित कार्यवाही नहीं करने के कारण भी साम्प्रदायिक हिंसा फैलती है। क्योंकि कभी–कभी पुलिस व प्रशासन समाज में हो रही साम्प्रदायिक घटनाओं को हलके में लेते है लेकिन ये छोटी–छोटी घटनाएँ कभी कभी विकराल रूप धारण कर लेती है जिसके कारण समाज साम्प्रदायिक हिंसा में घिर जाता है जिसका दुष्परिणाम होता है समाज में जनहानि, आर्थिक हानि, अवि वास, भय, वैमनस्य आदि। भारत में साम्प्रदायिक हिंसा फैलाने में पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान का भी हाथ है। पाकिस्तान भारत में आतंकवाद फैला रहा है। भारत में धर्म के आधार पर भारतीय मुसलमानों व हिन्दुओं के बीच अविश्वास पैदा करने की कोशिश करता है। पाकिस्तान द्वारा भारत के खिलाफ झूठा प्रचार किया जाता है एक सम्प्रदाय को दूसरे सम्प्रदाय से श्रेष्ठ समझना, शक्तिशाली समझना, सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करना एवं अपने सम्प्रदाय का ज्यादा प्रसार प्रचार करना एवं दूसरे सम्प्रदाय को कमजोर करने की भावना से भी साम्प्रदायिकता फैलती है। साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम साम्प्रदायिकता समाज व राष्ट्र के लिए बहुत घातक है यह एक ऐसा जहर है जो एक वार फैल जाये तो बहुत बडा नुकसान होता है। साम्प्रदायिकता से देश की एकता व अखण्डता को खतरा पैदा होता है। धर्म, मजहब व साम्प्रदायिकता के नाम पर 1947 में भारत का विभाजन हुआ था। साम्प्रदायिक हिंसा होने पर विभिन्न समुदायों के बीच वैमनस्य, तनाव, अविश्वास बढता है जिसमें पडौस के विदेशी मुल्क इसका फायदा उठाते है। ऐसी परिस्थितियों में राष्ट्र की एकता व अखण्डता को संकट पैदा हो जाता है। हमारा पडौसी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

देश पाकिस्तान भारत में घटित साम्प्रदायिक घटनाओं को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर उछालता रहता है जिससे देश की छवि व प्रतिष्ठा गिरती है। जिसका प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर पड़ता है। साम्प्रदायिक दंगों से देश की अर्थव्यवस्था कमजोर होती है। साम्प्रदायिक हिंसा में दुकानों, इमारतों, औद्योगिक इकाईयों में आग लगा दी जाती है। जिससे बहुत बड़ा नुकसान होता है। जिस शहर में साम्प्रदायिक हिंसा होती है वहॉ पर औद्योगिक धन्धे चौपट हो जाते है। लोग निवेश व व्यापार करने से डरते है। साम्प्रदायिक दंगों में लोगों की सम्पतियों को लूट लिया जाता है या आग के हवाले कर दिया जाता है। जब शहर में कर्फ्यू लगता है तो कल कारखाने व प्रतिष्ठान बन्द हो जाते है जिससे दैनिक मजदूर वर्ग, ऑटोरिक्शा चलाने वाले, फल, सब्जी, दूध विक्रेता, छोटे दुकानदार आदि बेरोजगार हो जाते है।

साम्प्रदायिकता से समाज के विभिन्न वर्गो के बीच आपसी तनाव, वैमनस्य, घृणा, द्वेष पैदा होता है। जिससे समाज में अशांति पैदा होती है लोग एक–दूसरे की जान के दुश्मन बन जाते है दंगायी लोग मार काट मचाते है। जिसमें अनेक निर्दोश लोगों की जान चली जाती है कुछ लोग अपाहिज हो जाते है। जिसका दुष्परिणाम होता है असुरक्षा, अशांति, गरीबी व अविश्वास पैदा होना। साम्प्रदायिक हिंसा के शिकार अधिकांशत गरीब, पिछड़े, कमजोर वर्ग, महिलाएँ, मध्यम वर्ग, मजदूर वर्ग, बुजुर्ग, निर्दोश लोग होते हैं जिससे समाज में अस्थिरता, मानसिक उत्पीड़न जैसी समस्याएँ पैदा हो जाती है। साम्प्रदायिक हिंसा व दंगों का देश की राजनीति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे देश में राजनीतिक अस्थिरता पैदा होती है लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था कमजोर होती है। जब देश में साम्प्रदायिक हिंसा होती है और सरकार उन दंगों पर समय रहते नियंत्रण नहीं कर पाती है तो लोगों में शासन के प्रति अविश्वास पैदा होता है। सरकार पर दबाव बढ़ता है ऐसी परिस्थितियों में गठबन्धन की सरकार को सत्ता भी छोड़नी पड़ सकती है जिससे राजनीति अस्थिरता का संकट पैदा हो जाता है। साम्प्रदायिक हिंसा व दंगों से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होता है। क्योंकि जब देश के अन्दर विभिन्न समुदायों के बीच आपसी वैमनस्य, तनाव, अविश्वास होगा तो देश की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होगा। साम्प्रदायिक दंगों से अनेक राष्ट्रीय समस्याएँ पैदा होगी।

साम्प्रदायिकता की समस्या को दूर करने के उपाय या सुझाव

साम्प्रदायिकता भारतीय समाज व राजनीति के लिए विनाशकारी है। जिसको जड़ से समाप्त करना अति आवश्यक है। क्योंकि साम्प्रदायिकता भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के समक्ष एक प्रमुख चुनौती बनी हुई है इसे खत्म करने के लिए निम्नलिखित सुझाव है– भारतीय समाज व संस्कृति विविधता का रूप लिये हुए है। यहॉ पर अनेक धर्मो के लोग निवास करते है उनके अलग–अलग रीति रिवाज, रहन–सहन, धार्मिक विचार, परम्पराएॅ व संस्कृति है। अतः समाज के सभी व्यक्तियों के बीच आपसी भाईचारा, मित्रता व प्रगाढ़ सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए। समाज के लोगों को ऐसी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। जिससे उनमें एक दूसरे के प्रति विश्वास, सम्मान, आदर की भावना पैदा हो। लोग आपस में एक दूसरे के प्रति मित्रतापूर्ण व्यवहार करें। शिक्षा पाठ्यक्रमों में नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की भावना पैदा करने, महापुरूषों व समाज सुधारकों के विचारों, लोककल्याणकारी व आध्यात्मिक मूल्यों आदि को शामिल करना चाहिए। देश के विद्यार्थियों को वैज्ञानिक शिक्षा दी जानी चाहिए। जिससे उनके मन व मस्तिष्क से कट्टरता, संकीर्णता, संकुचित सोच को समाप्त किया जा सके। ऐसी शिक्षा प्रणाली से साम्प्रदायिकता की समस्या को दूर किया जा सकता है। सरकार को भारतीय समाज के सभी धर्मो की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए ऐसे कानूनों का निर्माण करना चाहिए जिससे सभी धर्मो के लोगों में विश्वास पैदा हो। किसी धर्म के लोगों में असंतोष पैदा नहीं हो। लोग उन कानूनों को सहर्ष व आत्मा से स्वीकार करें एवं उनकी रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहे। कानून सभी पर समान रूप से लागू होना चाहिए। धर्म, सम्प्रदाय, जाति, क्षेत्र, भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। अगर कोई कानूनों की अवहेलना करे तो उसे उचित दण्ड मिलना चाहिए। इस में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए।

समाज में ऐसा वातावरण तैयार किया जाये जिससे सभी धर्मो व समुदायों के लोग मिल–जुल कर एक दूसरे का सहयोग करें एक दूसरे के सुख दुःख में काम आयें। सभी मिल जुलकर सार्वजनिक स्थलों पर मिलकर प्रार्थना करें। एक दूसरे के प्रति आदर व सत्कार का भाव पैदा करें। सभी धर्मो की नैतिक व आध्यात्मिक बातो को स्वीकार

करें। एक दूसरे के धर्मो को आलोचना नहीं करें। एक दूसरे के धार्मिक कार्यक्रमों में शामिल हो। साम्प्रदायिकता फैलाने वाले असामाजिक तत्वों से सभी मिलजुल कर मुकाबला करें। समाज में प्रेम व भाईचारे का वातावरण तैयार करें। नौजवानों के लिए गॉवों व मोहल्लों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये क्योंकि नवयुवक ही सबसे पहले किसी घटना में भाग लेते है। सभी समुदायों व धर्म के नवयुवकों को सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागिता निभानी चाहिए। जिससे की इनमें एक दूसरे के प्रति विश्वास, सद्भावना व मित्रता बढ़ सके। सरकार के द्वारा ऐसी नीतियॉ बनानी चाहिए जिससे की साम्प्रदायिकता की समस्या का निदान हो सके। ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे समाज व राज्य में साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिले। सरकार राष्ट्रीय एकता व साम्प्रदायिक सद्भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय संगोष्ठी जैसे कार्यक्रम आयोजित करे। जिसमें सभी धर्मो के विद्वानों को बुलाये एवं एक दूसरे के विचारों का आदान प्रदान करे। जिसमें देश की एकता, अखण्डता व सांस्कृतिक एकता पर बल दिया जाए। सरकार द्वारा सभी वर्गो और समुदायों के आपसी सहयोग से अलगाव की भावना पैदा करने वाले मामलों को तुरन्त प्रभावी ढंग से निपटाया जाए। सरकार को अपनी खुफिया एजेंन्सियों एवं पुलिस को सतर्क करते हुए हिंसक, असामाजिक, अलगाववादी, विखण्डनकारी तत्वों पर कडी नजर रखते हुए इनके खिलाफ कठोर कानूनी कार्यवाही करे एवं उचित दण्ड दिया जाये। साम्प्रदायिक हिंसा व दंगे फैलाने वालों के खिलाफ बिना किसी भेदभाव के सख्त व कठोर कार्यवाही की जाए। सरकार द्वारा पुलिस प्रशासन को सख्त निर्देश देने चाहिए कि कहीं पर भी साम्प्रदायिक हिंसा फैलती है। या दंगे होते है तो तुरन्त उस पर नियंत्रण लगना चाहिए। बिना किसी दबाव के तुरन्त निष्पक्ष रूप से कार्यवाही करनी चाहिए ऐसे मामलों में अगर पुलिस व प्रशासन किसी प्रकार की लापरवाही/कोताही बरते तो ऐसे अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए। संवेदनशील क्षेत्रों पर विशेष नजर रखनी चाहिए। वहॉ पर पुलिस प्रशासन को निष्पक्ष रूप से कार्य करना चाहिए।

आज समाचार पत्रों, टेलीविजन व अन्य साधनों से दुनिया के किसी भी कोने की खवर तुरन्त फैल जाती है। मीडिया को ऐसी घटनाओं को निष्पक्ष रूप से दिखाना

चाहिए। समाचारपत्रों एवं दूरदर्शन के माध्यम से सामाजिक सद्भावना पैदा करने वाली बातों को प्रसारित करना चाहिए। ऐसी फिल्मों व चलचित्रों को प्रसारित करना चाहिए जिससे समाज में साम्प्रदायिक सद्भावना पैदा हो। समाज में सकारात्मक जनमत निर्माण से सामाजिक समरसता एवं भाईचारा कायम किया जा सकता है। आज लगभग सभी व्यक्ति संचार के साधनों (सोशल मीडिया) से जुडे है। इसलिए दूरदर्शन, मोबाईल, कम्प्यूटर आदि के माध्यम से नकारात्मक व साम्प्रदायिकता फैलाने वाली बातों को प्रसारित नहीं करना चाहिए। देशभक्ति, राष्ट्रीयता की भावना, सामाजिक समरसता आदि पैदा करने वाले समाचारों व विचारों को प्रसारित करना चाहिए। भारत में अनेक धर्म, सम्प्रदाय व जातियॉ है कोई धर्म बहुसंख्यक है तो कोई अल्पसंख्यक है। सरकार द्वारा सभी कार्यो को इस प्रकार करना चाहिए जिससे अल्पसंख्यकों में किसी प्रकार का डर नहीं हो उनमें आत्मविश्वास व निडरता की भावना उत्पन्न हो। बहुसंख्यकों को अल्पसंख्यकों के हितों व अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। बहुसंख्यकों व अल्पसंख्यकों दोनों को बराबर अवसर उपलब्ध कराये जाये जिससे दोनों समुदायों के बीच संतुलन बना रहे एवं सद्भावना बनी रहे। ऐसे संगठनों पर रोक लगानी चाहिए जो साम्प्रदायिक हिंसा व उन्माद फैलाते हो जिससे देश की एकता व अखण्डता को खतरा उत्पन्न हो। समाज की भाांति व समृद्धि को खतरा पैदा हो तथा ऐसे संगठनों को किसी भी प्रकार का सहयोग करने वाले व्यक्तियों की जॉच कर उनके खिलाफ भी सख्त कार्यवाही करनी चाहिए। राजनीतिक दलों को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे की साम्प्रदायिकता की समस्या उत्पन्न हो। राजनीतिक दलों को एक आचार संहिता तैयार कर उसके अनुसार कार्य किया जाना चाहिए। धार्मिक स्थलों पर ऐसी सभाओं व बैठकों पर प्रतिबन्ध होना चाहिए। जिससे साम्प्रदायिकता की समस्या उत्पन्न हो समाज में आपसी वैमनस्यता, तनाव पैदा हो। लोगों में कट्टरता उत्पन्न हो, समाज में हिंसा फैले इस प्रकार की बैठकों को रोकने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए आदि उपायों से साम्प्रदायिकता की समस्या का हल हो सकता है।

निष्कर्ष

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है यहॉ पर सभी धर्मो को समान आदर व सम्मान है। देश में अनेक धर्मो, सम्प्रदायों के लोग निवास करते है जिनकी अलग अलग रीतिरिवाज, धार्मिक आस्था, परम्पराएॅ, संस्कृति है। हर धर्म मानव कल्याण सुख समृद्धि, शांति, आपसी प्रेम भाव, व्यक्ति का आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक विकास चाहता है, लेकिन आज साम्प्रदायिकता की समस्या के कारण भारतीय राजनीति पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। जिससे देश की लोकतांत्रिक शासन प्रणाली व धर्मनिरपेक्षता को खतरा पैदा हो रहा है। देश में समुदायों के बीच आपसी तनाव, वैमनस्य, भय, असुरक्षा का वातावरण पैदा होता है। साम्प्रदायिकता से देश की एकता व अखण्डता कमजोर होती है। राष्ट्र की सुरक्षा को खतरा पैदा हो जाता है। देश का आर्थिक विकास प्रभावित होता है। साम्प्रदायिकता मानवजाति के लिए खतरा है जिसका निराकरण अति आवश्यक है। साम्प्रदायिकता को समाप्त करने के लिए राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, प्रशासनिक, आर्थिक आदि स्तरों पर आपसी विश्वास, ईमानदारी, समन्वित प्रयास से कार्य करने की आवश्यकता है। साम्प्रदायिकता देश व मानव जाति के लिए अभिशाप है कलंक है खतरनाक है। इसे किसी भी तरह हर हाल में समाप्त किया जाना अति आवश्यक है, क्योंकि साम्प्रदायिकता समाप्त होगी तो देश में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली मजबूत होगी, देश की एकता, अखण्डता मजबूत होगी, धर्मनिरपेक्षता मजबूत होगी, अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, शैक्षणिक व वैज्ञानिक ज्ञान का विकास होगा, विभिन्न धर्मो व समाज के लोगों के बीच आपसी समरसता, सदाचार, मित्रता, बन्धुत्वता, विश्वास, परोपकार, नैतिक चरित्र का विकास, सहयोग की भावना का विकास होगा। देश में सुख समृद्धि व भाांति का वातावरण होगा। देश विकास व उन्नति की नई ऊँचाइयों को छुएगा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 4, April 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैन, पुखराज व फडिया, बी0एल0 – भारतीय शासन एवं राजनीति (राज्यों की राजनीति सहित), साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2005 पृ0 सं0– 500–512।
2. त्रिवेदी, आर0एन0 व राय, एम0पी0 –भारतीय सरकार एवं राजनीति, कॉलेज बुक डिपो, नयी दिल्ली व जयपुर, 1997, पृ0 सं0 – 413–426 व 430–443।
3. तायल, बी0बी0 –भारतीय शासन और राजनीति, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा 1995, पृं0 सं0– 544 – 552।
4. अग्रवाल, आर0 सी0–भारतीय संविधान का विकास तथा राष्ट्रीय आन्दोलन, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0 नई दिल्ली, 1996, पृ0 सं0 – 168–177, 178–185, 199–217, 266–291,।
5. मिश्रा, महेन्द्र कुमार –भारतीय राजनीतिः समस्याएँ और समाधान, आर0बी0एस0ए0 पब्लिशर्स, जयपुर, 2008, पृ0सं0 – 115–123।
6. विपिन चन्द्र–भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय– दिल्ली, 1998, पृ0सं0 319–354।
7. मंगलानी, रूपा –भारतीय शासन एवं राजनीति, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2005, पृ0 सं0 – 495–504।
8. विभिन्न – पत्र पत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र।
9. दूरदर्शन/टेलीविजन पर डिबेट/परिचर्चा।